राजेंद्र प्रसाद

नाम	डॉ राजेंद्र प्रसाद
जन्म	3 दिसम्बर 1884
स्थान	जीरादेई गाव , सारण ज़िला (वर्तमान में सीवान) बिहार
पिता	महादेव सहाय (संस्कृत और फारसी के बिद्वान)
माता	कमलेश्वरी देवी (कुशल गृहणी और धर्मपरायण महिला थी)
शिक्षा	अर्थशास्त्र से एम० ए०, लॉ से एम० ए०, लॉ से डॉक्टरेट
शादी	राजवंशी देवी (1896 - 1962)
बच्चे	3
जाती	कायस्थ
धर्म	हिन्दू
सर्वोच्च पुरस्कार	भारत रत्न
राष्ट्रीयता	भारतीय
निधन	28 फरवरी 1963
स्थान	सदाकत आश्रम , पटना , बिहार

संक्षिप्त विवरण

"डॉ राजेंद्र प्रसाद" इस नाम को किसी भी परिचय की जरूरत नहीं है । खासकर भारत में बच्चा जब बोलना या पढ़ना शुरू करता है तो उसे यही बताया जाता है कि हमारे स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद थे। साथ ही साथ उनका भारत को स्वतंत्र करवाने में भी बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है उस समय बस एक ही राजनीतिक पार्टी था जिसका नाम भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस । और हमारे राजेंद्र प्रसाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष भी रह चुके थे साथ ही साथ भारत के पहले मंत्रिमंडल में

1946 और 1947 में कृषि और खाद्य मंत्री भी बने थे । उस समय किसी के नाम के साथ बाबू जोड़कर बोलना सम्मान होता था इसलिए लोग डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद को सम्मान से राजेंद्र बाबू के नाम से बुलाते थे

शुरुआती जीवन

जैसा कि हम सभी को पता है कि डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर 1884 को बिहार राज्य के सारण जिला (वर्तमान सिवान) में जीरादेई नामक गांव में हुआ था । लेकिन डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद मूल रूप से बिहार के नहीं थे । इनके पूर्वज मूल रूप से उत्तर प्रदेश के अमोदा (जोकि बस्ती जिला में पड़ता है) के निवासी थे। इस गांव में कायस्थ परिवार ज्यादा थे जिनमें से कुछ लोग वहां से निकल कर अलग-अलग स्थानों में जाकर बस गए उन्हीं में से कुछ परिवार बिहार के सारण जिले (वर्तमान सिवान) में आकर रहने लगे । डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद का परिवार भी उनमें से एक था । इनके पिता का नाम महादेव सहाय था और वह संस्कृत और फारसी के विद्वान थे । उनकी मां का नाम कमलेश्वरी देवी था वह एक कुशल ग्रहणी और धर्म में विश्वास रखने वाली महिला थी ।

चुकी डॉ राजेंद्र प्रसाद के पिता जी संस्कृत और फारसी के विद्वान थे तो यह बात साफ हो जाती है कि राजेंद्र प्रसाद का परिवार काफी पढ़ा लिखा था इसलिए इनके परिवार को हथुआ रियासत की दीवानी मिल गई। उस समय दीवानी का काम बहुत महत्वपूर्ण काम होता था । कुछ ही समय के बाद राजेंद्र प्रसाद के पिता और चाचा मिलकर कुछ जमीन खरीद लिए और जमींदारी करने लगे । राजेंद्र प्रसाद पाच भाई-बहन थे जिनमें वह सबसे छोटे थे लेकिन इतना पैसा और प्यार का प्रभाव उनके जीवन पर नहीं पड़ा । वह बहुत ही सामान्य जिंदगी जीते थे । इसलिए वह अपने परिवार के साथ-साथ आसपास के भी दुलारे थे । डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद का एक भरा पूरा परिवार था जिसमें दादा-दादी, चाचा - चाची, थे । वह कहते हैं ना “पूत के पांव पालने में दिख जाते हैं” (किसी व्यक्ति के भविष्य का अनुमान उसके वर्तमान लक्षणों से लगाया जा सकता है) । यह कहावत डॉ राजेंद्र प्रसाद पर बिल्कुल सटीक बैठता है । बचपन से ही उनके व्यवहार में एक सादगी था वह रोज रात में बहुत जल्दी सो जाते थे और सवेरे बहुत जल्दी उठ जाते थे साथ में अपने माता जी को भी उठा देते थे और माताजी रोज सुबह उन्हें धार्मिक कहानियां भजन सुनाती थी जिसका प्रभाव राजेंद्र प्रसाद के व्यक्तित्व पर पड़ा ।

शिक्षा

उस समय आज की तरह इतने सारे स्कूल नहीं होते थे । बच्चे का प्रारंभिक शिक्षा या तो घर में शुरू होता था या फिर बड़े होने के बाद सरकारी स्कूल में इसलिए घर को प्रथम पाठशाला कहा जाता है । और माता-पिता को पहला गुरु । उसी तरह का डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद की शिक्षा तो उनके घर में जन्म के बाद से शुरू ही था लेकिन बाहर के शिक्षा या कहें स्कूली शिक्षा 5 साल की उम्र से शुरू हो गई थी । जब वह सबसे पहले एक मौलवी के पास फारसी सीखने के लिए जाने लगे । ये उनकी माँ राजवंशी देवी की इक्छा थी की वो फारसी सीखे क्योकि राजेंद्र प्रसाद के पिता फारसी और संस्कृत के बिद्वान थे । फिर छपरा के जिला स्कूल से वह अपने प्रारंभिक शिक्षा समाप्त किए । चुके उस समय बाल विवाह आम बात थी तो डाक्टर राजेंद्र प्रसाद भी इससे बच नहीं पाए और 13 वर्ष के आसपास उनकी शादी राजवंशी देवी से करवा दी गई । हालांकि इसका प्रभाव उनके शिक्षा पर नहीं पड़ा उनकी शिक्षा पहले की तरह चलती रही फिर 18 वर्ष में उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा प्रथम स्थान से पास किए और वहां के प्रसिद्ध प्रेसिडेंसी कॉलेज में दाखिला लिया । उस समय कोलकाता विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा पास करना अपने आप में एक उपलब्धि थी और डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने इस परीक्षा में प्रथम स्थान हासिल किए थे । अब राजेंद्र प्रसाद की चर्चा बड़े-बड़े लोगों के बीच होने लगा जैसे गोपाल कृष्ण गोखले और अनुग्रह नारायण सिन्हा उनसे काफी प्रभावित थे । 1915 में एल एल एम की परीक्षा गोल्ड मेडल के साथ पास किए और लास्ट में डॉक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त किए । फिर वापस बिहार आ गए और भागलपुर में लॉ प्रेक्टिस करना शुरू किए ।

स्वतंत्रता में भागीदारी

डॉ राजेंद्र प्रसाद की लॉ की पढ़ाई 1915 में समाप्त होने के बाद वह अभी भागलपुर में अपनी प्रैक्टिस शुरू ही किए थे कि बिहार में ही एक जगह है चंपारण वहां किसानों को अंग्रेजों के द्वारा काफी परेशान किया जा रहा था । उनसे जबरन नील की खेती करवाया जाता था । किसान नील की खेती नही करना चाहते थे क्योकि नील की खेती से जमीन धीरे धीरे बंजर हो जाती थी । इससे किसानों की स्थिति बद से बदतर होते जा रही थी । और उनमें से कुछ किसान ने इसके खिलाफ कोर्ट में शिकायत दर्ज करवाया था जिसके वकील डॉ राजेंद्र प्रसाद थे ।

गांधीजी जो कि अभी दक्षिण अफ्रीका से वापस आए थे और वह पूरे भारत का भ्रमण कर रहे थे और लोगों को एक साथ जोड़ने के प्रयास में लगे हुए थे । जैसे ही उन्हें इस प्रकरण के बारे में जानकारी प्राप्त हुई वह बिहार के चंपारण आए और वही सबसे पहले डॉ राजेंद्र प्रसाद महात्मा गांधी से मिले । पहले तो राजेंद्र प्रसाद गांधी जी से किसानों के वकील के रूप में मिले क्योंकि आपको पहले ही बता दिया गया है की कुछ किसान नील की खेती के खिलाफ कोर्ट में केस कर चुके थे और राजेंद्र प्रसाद

उनके वकीलों में से एक थे । लेकिन समय के साथ-साथ डॉ राजेंद्र प्रसाद महात्मा गांधी के काम, वचन और उनके विचार से काफी प्रभावित हुए और गांधीजी के साथ स्वतंत्रता संग्राम में उतर गए । राजेंद्र प्रसाद गांधी जी के विचारों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय के सीनेटर के पद को छोड़ दिया और गांधी जी का साथ देने लगे । जब गाँधी असहयोग आंदोलन शुरू किए थे और प्रोफेसर , शिक्षक , छात्र और पुरे भारत की जनता से बिदेशी वस्तू और काम का बिरोध करने का आवहन किए तो असहयोग आंदोलन को सफल बनाने के लिए डॉ राजेंद्र प्रसाद ने अपने पुत्र जिनका नाम मृत्युंजय प्रसाद था और वह एक मेधावी छात्र थे उन्हें कोलकाता यूनिवर्सिटी से हटाकर बिहार विद्यापीठ में उनका नाम लिखवा दिए । आगे जाकर डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद कांग्रेस के अध्यक्ष भी बने । 1942 में जब गांधीजी ने भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किए थे तो डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद को उस आंदोलन के कारण जेल भी जाना पड़ा । और अंत में जब 1947 में भारत को आजादी मिली तो 26 जनवरी 1950 को डॉ राजेंद्र प्रसाद को देश का पहला राष्ट्रपति बनने का गौरव प्राप्त हुआ डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद पहले और आखरी राष्ट्रपति है जो लगातार दो बार राष्ट्रपति बने ।

राष्ट्रपति होने के बावजूद भी डॉ राजेंद्र प्रसाद बहुत ही सरल जीवन जीते थे। उनको देखकर यह पता नहीं लगाया जा सकता था कि वह एक महान शिक्षक महान वकील या राष्ट्रपति हैं वह एक सामान्य इंसान या कहें तो एक किसान के तरह लगते थे। जब राष्ट्रपति बनने के बाद पहली बार डॉ राजेंद्र प्रसाद अपने गांव जीरादेई जोकि बिहार के सारण जिले में पड़ता है गए तो वहां पर उनका काफी स्वागत किया गया और जब उनकी दादी ने उनको देखा तो बहुत ही सरल शब्दों में कहा की सुना है तुम बहुत बड़े आदमी बन गए हो सिपाही से भी ज्यादा बड़े । इसी तरीके से आगे बढ़ते रहो और राजेंद्र प्रसाद मुस्कुरा कर रह गए राष्ट्रपति बनने के बाद भी उन्होंने अपना पूरा जीवन देश को समर्पित कर दिया था।

रचनाए

ऐसे तो डॉ राजेंद्र प्रसाद ने बहुत सी पुस्तके लिखे है लेकिन उनमे से कुछ प्रमुख रचनाएं थी :-

सत्याग्रह एक्ट चंपारण 1922 ई०

आत्मकथा 1946 ई०

इंडिया डिवाइडेड 1946 ई०

बापू के कदमों में बाबू 1954 ई०

गांधीजी की देन

भारतीय संस्कृति और खादी का अर्थशास्त्र इत्यादि

सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न

26 जनवरी 1950 से 14 मई 1962 तक डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद लगातार 12 वर्षों तक राष्ट्रपति रहे और अंत में 1962 में उन्होंने अपने अवकाश की घोषणा की और इसके बाद उनके सम्मान को दर्शाने के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ उपाधि भारत रत्न से सम्मानित किया गया ।

निधन

28 फरवरी 1963 का दिन डॉ राजेंद्र प्रसाद के आखिरी दिन था इसी दिन हमारे महान राष्ट्रपति, नेता, प्रोफेसर, वकील और शिक्षाविद ने इस दुनिया को अलविदा कहा और वह अपना आखिरी वक्त पटना के पास सदाकत आश्रम में बिताए थे।